



নারী নরকের দ্বার স্বরূপ

ভগবান বশিষ্ণু কপলি মুনি অবতার কর্তৃক জীবরে গতি সমন্ধে উপদেশে।।

ন তথাস্য ভবনেমাহো বন্ধশ্চান্যপ্রসঙ্গতঃ ।

যাষেতিসঙ্গাদ্যথা পুংসো যথা তৎসঙ্গসিঙ্গতঃ ॥

অনুবাদ- স্ত্রীসঙ্গ এবং স্ত্রীসঙ্গীর সঙ্গ জীবরে য়ে প্রকার মাহে ও বন্ধন সৃষ্টি কর়ে, অন্য কোন বস্তুর সংসর্গে সেই রকম হয় না। (শ্রীমদ্ভাগবত ৩/৩১/৩৫)

বলং মৈ পশ্য মায়ায়াঃ স্ত্রীময়া জয়নিনা দশি।

যা করাতেপি পদাক্রান্তা ভুবজিবম্ভণে কবেলম্ ॥

অনুবাদ - ভগবান কপলি মুনি বললনে স্ত্রী রূপিনী আমার মায়ার প্রভাব দেখুন, য়ে কবেল তার ভূভঙ্গরি দ্বারা এই জগতরে সর্ব শ্রেষ্ট বীরদরে তার পদাবনত করে রাখ়ে। (শ্রীমদ্ভাগবত ৩/৩১/৩৮)

সঙ্গং ন কুর্যাপ্রমদাসু জাতু যাগেস্য পারং পরমারুরুক্ষুঃ।

मंसवेया प्रतलिक्वात् मलाभावे वदन्ति या नरियद्वारमस्य ॥

अनुवाद - यनि यागेरे सर्वोच्च पराकाष्ठा लाभ करतते चान एवं आमार सबोर द्वारा यनि आत्मउपलब्धि लाभ करछेने, तादरे कखनई सुन्दरी रमणीर सङ्ग करा उचति नय., कारण शास्त्रे 'घाषेणा करा हय.छे ये, भक्तरें जन्म नारी नरकरें द्वार स्वरूप। (श्रीमद्भागवत ७/७९/७९)

यापेयाति शनरैमाया याषेदिदवेनिर्मिति ।

तामीक्षतोत्तमना मृत्युं तृणैः कूपमिवितम् ॥

अनुवाद - भगवानरे निर्मिति नारी मायार प्रतनिधि, एवं ये व्यक्तिसबो अङ्गीकार करे এই मायार सङ्ग करे, तार नश्चिन्ताभावे जनेने राखा उचति ये, ता तृणाच्छादति कूपरे मताते तार मृत्यु-स्वरूप। (श्रीमद्भागवत ७/७९/८०)

यां मन्वते पतिं माहोन्मन्मायामृषभायतीम् ।

स्त्रीत्वं स्त्रीसङ्गतः प्राप्तो वित्तापत्यगृहपदम् ॥ ।

अनुवाद - जीव तार पूर्वजन्मे नारीर प्रति आसक्त होयार फले, এই जन्मे

माहेवशत नारीरूपी मायाकते सम्पद, सन्तान, गृह आदरि प्रदाता बले मने करे। (श्रीमद्भागवत ७/७९/८९)

